



पुर्ववासना

ॐ

आनंदा

भक्त्या

भक्त्याकाशावा

तय

तय

सत

नाना

पुर्ववासनावा

आभाकरकाशि

2265

श्री

हयगिरि

॥ अम्वरगीता ॥

१८७१ मातृ

आषाढसुदी १५ गज ३ मा

गणेशवहादुरकम्यपतीकी

कीतापु १

॥ अम्बरगीता ॥

ॐ नमः ॥ वह्नगो ॥ ॥ ॐ अनादि आत्मा सत्यं चिदानन्दो ह ॥
तुभ्यं मह्यं मना मम हेतुभ्यं शिवात्मन नमो देवाम देवाम परायणं प
रमात्मने ॥ १ ॥ ये स्को अर्थ ते स्को अनन्त विश्वका आत्मा उ शिवजी
हन् सो संपूर्ण वरावरमा सा हि भूत आत्मा भैति सार मेरा भीत्र वा
हिर तिने लोक संसार मा उने आत्मा स्वरूप रक्षा का हन् भये यो शु
ति प्रमाणा को अर्थ ते पति से वर से वक भैत म स्कार गने को हो भैये
सका मा ये लामा संपूर्ण देवता का पनी देवता भया का मेरा आत्मा
आत्मे को नमस्कार ह् भैने श्रुति प्रमाणा को नमस्तो मंगला चर ह्
यसे गरी मारत वस्त्र ये के ह् दुई होई न ॥ फेरी कृष्ण त्पु त्पु र साम
र्थ वरा ई चार वेद का पद पदार्थ ले पति ये के ह् अर्को ह् न पु
न पुना मा नन्द वंश ऋग्वेद का पद मा ह् ॥ अहं वंशो स्मिति
सामवेद का पद वा न्द ॥ तत्त्व मस्मिति सामवेद का प्रमा न्द ॥ अ
पमात्म वंशति वनवेद का पद मा ह् ॥ ये स्तां चार वेद का निग
म पद ले पति वंश ये के ह् दो ओ ह् न ॥ दक्षे विना छाया हा
याम विना दृक्षे ये स्ता दृक्षे छाया का प्रमाणा ले पति वंश माया
ये के ह् भिन्न ह् न ॥ अर्थात् नित्य अद्वितीय चैतन्य वंश ह् न
अनिति द्वितीय मा चैतन्य माया वोला उ ह् न तस अर्थ वं
श माया नजिके ह् न भिन्न ह् न भैये श्रुति प्रमाणा सिद्धान्त

माह भिन्न है न ॥ १ ॥ इसा वा स्यति ॥ ३ ॥ अस्यार्थ ये स्ता संपूर्ण
 तत्र मां ये सा परमेश्वर आत्मा ईश्वर ते गरी यो पृथ्वी वी च्यति
 पियारो गरी जो कोहि सबे मा अछा दगा भै स्व ही आत्मा ईश्व
 र ते छार के कोछ तस्मै यो जगत्मा नाम रूप भे डते पनि सम्पू
 र्ण ये के छ भिन्न है न ॥ फेरी परमार्थ विचार गदीत जस्ते चन्द
 न पानिका सर्व धते गरी घोटिया को छ दा पानि पनि चन्दन
 भै शुर्ग धते युक्त होई जान्छ तस्मै सम्पूर्ण जन्म व्याप जानि आ
 पु विरा नु भन्ना ममता छो डि देउ आ फे पालन कर्म को भो
 ग गर्नु ये स्ता संपूर्ण आत्मे रहे को छ नु भन्ना भावना ते गरी धन
 जन पुत्रादि मा पनि ममता छो डी देउ आत्मे ज्ञान को निष्ठा ग
 री रहनु भन्ना पूर्वा ध्यायेने कहै को छ नु दो आ पाई मा तत्व को
 उपदेश कहिया को छ ते आ पावने ज्ञान मा पनि ये क भया का
 गर्त कार्य कहै को छ चौथा पावने ये के अद्वितीय वृक्ष छ नु म
 नि ज्ञानि जन हक का नियम कहिया को छ तसर्थ अमृत माया
 ये के छ दो श्री है न ॥ उने वृक्ष ये के रक्षा छु धेरे ई छ भय ई
 मा ईच्छा शक्ति कृपा शक्ति ज्ञान शक्ति भया का निरूपकार
 को उत्पन्न भया को छ नु ये स्ता वृक्ष देवी उत्पन्न भया का

ईच्छाशक्तिः पुनर्फेरि ब्रह्मे मातिन ईच्छ तसर्थ ब्रह्ममायावोति
 मात्र भिन्नरूपकहेन ॥४॥ अतश्चक्र सोदसाधारं त्रैलोक्यं
 व्यामर्पचक्रम् ॥ सोदेहं योनजानाति कथं सिद्धेतियोगिनः ॥५॥
 येकस्मिन् नवद्वारं त्रिमुन्यं पञ्चदेवताम् ॥ सोदेहं योनजाना
 तिकथं सिध्यति योगिनः ॥६॥ गोरक्षसप्तककापदत्तपनि य
 सै सगिमा अतश्चक्र १ सोदसाधार १ तीनलोक १ आकाशादिप
 चतत्त्वयतिफेरि यसै शरिर्मो नवद्वार त्रिमुन्यं पञ्चदेवताह्व
 भनी कहकोह्व नजाना मूर्खले गयाका ज्ञानयो केशा गरिसि
 द्दहोला भन्या वाक्यतेपनि ब्रह्ममायायकेह्व दो ओह्वेन ॥ ब्रह्म
 कानामपनि पाचह्व ब्रह्म १ जिव १ स्वभाव १ काल १ कर्म १ आ
 पे समभावहुदा ब्रह्म आहु स्वरूप भुतमे जीव १ सुख दुःखमा
 न अपमानको समभावहुदा सोभाव १ मत छु भन्या सोभावती
 दा काल १ सम्पूर्ण कर्म धर्मे भुताने कर्म कहाया कोह्व योप्र
 माणातेपनि ब्रह्ममायायकेह्व दो ओह्वेन ॥७॥ फेरिमायाकोप
 निपाचेनामह्व माया १ आकाश १ शून्य १ शक्ति १ युक्ति १
 ब्रह्मसंयुक्तहुदा माया १ पृथ्वीयादि संयुक्तहुदा आकाश
 १ जलतत्वसंयुक्तहुदा शून्य १ सम्पूर्ण सकार तनुको समभाव

॥ अमरगीता ॥

४

हुदाशक्ति १ मपुजागर्नेहु पुजागर्नेपदार्थअर्केहुभयासभा
वहुदाप्रकृतिकहेकोहुयस्नेप्रकारनेपृथकपृथकमिश्र
तकोपचतत्वरपुवंधारगावनिश्रुतिस्थितिसेहारहोई
रहेकोहुसंपूर्णयकेहुदोश्रोहेन ॥ ॥ आसुर्यतामतेलो
केअन्धेनतमसावता ॥ तामेपेयाभीगहनिनेकचात्मह
नोजना ॥ ८ ॥ भयाअर्थनेयेलावापकआत्मास्वप्नभया
कापनिजानीमुखहहुवहमायाभन्याहेनपेचमापरिक
र्मफलकाईच्छाभयाकामनुष्यजोहनुसोतिमरेरअंधेले
युक्तलोकमापुग्छनुतीलोकहुनुभन्याआत्माघाटिहुनुकी
नभन्यायस्ताओफेमावारवारप्रत्यक्षप्रकाशभेरह्याकाप
निउस्ताआत्माकनअफेअविद्याकोदोषलेगरिउस्तास
वेमाप्रत्यक्षअतिपीयागपनिआत्माकनहोईनभनिजानम
तिसेस्कारगन्याजोहसोतिआत्माघाटिहोईकनमन्याजस्ता
२जानजस्ता२कर्मगयाकोहुतस्तेस्थावरजगमादिकयो
निमाप्राप्तभेफीनुपदेहुतसर्थयस्ताप्रत्यक्षप्रसिद्धहोई
रह्याकाआत्माकनजानिजनहहनेनेकअजरअम्वरंत
वहोईजान्छनुभन्यायेस्ताअफेमाप्रत्यक्षप्रसिद्धभयाका

आत्माताई छोडी कन देखी याको कर्मफल कन ईच्छागर्भे जो
 हनु सो तो मनुष्य पुद्गल भयाको दोपता अज्ञान पशुकही
 हतसर्थ तो पापी ते से पाप ते तो भववार विवेज नम मृत्युको
 मिरपाउ घेहि कन वारवार तो पृथिवी माँ फेँदिर हनु पनाले
 अंधा कहताउ हतवर्ष माया डई होई नये के हो ॥१॥ येला
 यके अखंड सचित्तानंद अखय वर्ष देवी आकाश उत्पन्न
 भयाको ह १ आकाश देवी वायु उत्पन्न भयाको ह १ वायु दे
 वी तेज उत्पन्न भयाको ह १ तेज देवी जल उत्पत्ति भयाको ह १
 जल देवी पृथ्वी उत्पन्न भयाको ह १ यो पंचतत्त्व पृथ्वी आदि दे
 वियो संसृति पिराड बुझाए जीव यो निःसृष्टि स्थिति संहार
 होई रहगो भुवन व निरहे को ह तस्मान् तो पंचतत्त्व जोई सोहि
 माया कहताई ह माया भयाको अर्को ह न किन भया तिने प
 चतत्त्व जडाका सन्वध ले गरि उस्ता अखराड सचित्तानंद वर्ष
 पनि जीव कहताई रक्षा को ह न तस अर्थ नित्य शुद्ध चेतन्य व
 ल ह न अति यमा चेतन्य जीव वोलाई ह न जल पनि यो सरिक
 न चेतन्य का सर्व धले वर्ष माया सदा सर्वदा समीपे ह न भ
 त्या श्रुति पुमा सापनि ह आदि वर्ष माया जो ह सो डई होई न
 ये के हो ॥११॥ अर्ध तम प्रवि सती सय भुति मुपा सते ॥

॥ अम्बरगीता ॥

६

तत्त्वभूय ईवने जपो प उ स भू त्वारता ॥ १२ ॥ यो भुति प्रकाशको
 अर्थ सुन उस्ता अफे कर्ता स्वरूप भयाका आत्मा ताई न जीमा
 भयाका यस्ता आत्मा भिमानि भयाका प्राणिकन यथा यो
 गे विभाग गरीया काई दोपनि अफे कर्म बसते न देखीया को
 ई दो फल को ई द्वागर्दमा अंधकार लोक मा प्रवेश करुन जीह
 तिको करु भन्या सुहा फेरी मरीर बडां रुदामा शिर भयाका अ
 ग्नि होत्रादि अविद्या को उपास्य गह्वर सोही कर्मा नुसार ले
 गरि के हुना सनहुन्या अति अंधकार लोक मा प्रवेश होई कन
 सो सन्सार रुपी नग वात वीना बार बार फीरी रहनु पर्दछ जो
 ततोस्ता कर्म गदी ई दोपनि सो सो कर्म कन सम गरी फेरि
 तत्व जाने मार हई भन्या सोही तत्व जानका प्रभाव ले के म
 सग ईश्वर पाई कन आत्मा स्वरूप होई जानु भन्या लेप
 निजिव स्वरूप दुई होई नय के हो भनि जानु पर्दछ ॥ १२ ॥
 तम अर्थ उने अद्वैत आत्मा ईश्वर देखी पै तत्व पचि सप्त
 कृति भयाको वर्ग नम कहि छु सुन आकाश वायु तेज
 आप पृथ्वी ई पांचमा आकाशको सर्व मय गुण छ वायु
 को निल वर्ण छ तेज को रक्त वर्ण छ आपको स्वेत वर्ण पृ
 थ्वीको पीत वर्ण छ तेस्ता पृथ्वीको असमाया हो आप

॥ अमृतगीता ॥

को अमृत कह्यो ॥ तेज को अमृत कह्यो ॥ वायु को अमृत
 कह्यो ॥ आकाश को अमृत चतुस्तय अन्तर्गता कह्यो ॥ फेरि
 मध्य आकाश को अमृत कह्यो ॥ स्पर्श वायु को अमृत कह्यो ॥ रूप ते
 ज को अमृत कह्यो ॥ रस आप को अमृत कह्यो ॥ गंध पृथ्वी को अमृत
 कह्यो ॥ इ पांच जाह्नव सो संपूर्ण जनि दिग्गज मान्य कह्यो ॥ न
 नाते पनि माया ब्रह्म भवतु वीती मात्र भिन्न द्वय के हो ॥ १३ ॥
 फेरि वायु आकाश को अमृत कह्यो ॥ पानि वायु को अमृत कह्यो ॥ पानि
 अग्नी को अमृत कह्यो ॥ पस्थ आप को अमृत कह्यो ॥ वायु पृथ्वी को अ
 मृत कह्यो ॥ इ पांच पानि के मेल दिग्गज मान्य होई जीह्नव भवतु प
 नि ब्रह्म माया के द्वंद्व दो ओह्ये ॥ १४ ॥ फेरि सुन ब्रह्म वीरा
 कता महा विष्णु कह्यो ॥ पची मतत्व माया कह्यो ॥ यस्मात्पचा
 त्कला सैयुक्त होई याका मनुष्य सरीर कह्यो ॥ ताहा भी चतु
 स्तय अंतर्गता कह्यो ॥ ते चतुस्तय अंतर्गता आत्मा सैयु
 क्त पांच नवतत्व को ताहा भिन्न लिङ्ग सरीर कह्यो ॥ सुषुप्ति
 ति मय अमृत रूप भवतु सैयुक्त भयाको एक सरीर कह्यो ॥ ताहा
 अथवा पानि चारह्नव जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति गीया ४ तत्को
 नाउ स्थूल सूक्ष्म विराट् ३ यो प्रमाणाते पनि ब्रह्म माया भि
 न्न होई नय के हो ॥ १५ ॥ फेरि उने ब्रह्म स्वरूप आत्मा पंध

॥ अमृतमिता ॥

८

तत्त्वलीकार्यगर्भातेजाग्रतकहलाईहूतवतत्वसंयुक्तका
 वारिलीभ्रमनालेस्वप्नाकहलाईहूद्वीसतत्वलीभ्रमना
 लेसाहीसरीरसुसुप्तीईहूसाहीसरीरमाभ्रतावहोरखा
 हूभनीजायोभन्यातुरीयाकहलाईहूभन्याभ्रतिप्रमारा
 लेपनीवृक्षमायाभीनंदेनयवैहू॥१६॥भोक्तृगोत्रपु
 तीताह्ययत्वासर्वप्रान्तमवीर्घवृक्षचैतत्॥जीवेगानोश्री
 जंमानंजगत्सुद्धवृक्षात्ताहान्ययत्तवाक्यम्॥१७॥अर्थले
 भोक्ताभ्रमायाकोभोक्षभन्याजिवप्रपंचमान्यावस्तुहो
 प्ररिताभन्याकोईश्वरहोईतीनूलाईभीन२हूतभ्रह्मईतीन
 केवलयेकेवृक्षहूतदोश्रोहूतकसागरीभनोलातजसेउ
 नेयेकेआत्माकोमनवुद्धीचीतअहंकारभैरखाहूईश्वर
 जीवजगतपोनानायेकेआत्मादेवीहोईरखाकोपोजगत्
 जोजतिहूकेवलयेकेवृक्षदेवीहोईरखाकोहूतसअर्थवृ
 क्षरमायायेकेहूतियहूत॥१८॥जसेसूर्यरूपधुपधुवारसू
 र्यइहोकीयेकेहोतसेमायारवृक्षभ्रपनिइहोईनयेके
 हो॥जसेसुवर्गरगहनाइहोकीयेकेहोतसेवृक्षमाया
 भ्रतसेइहोईनयेकेहोतसेसमुद्रसमुद्रकोतरंगइहो
 होकीयेकेहोतसेजिववृक्षभ्रपनियेकेहोभिन्नहोईनअ
 थवाहेवेदधारीहोयेकयदिहोईनभ्रह्मभन्यावृक्षकोरजिव

॥ च्यम्बरगीता ॥

को स्वरूपक स्तोत्र तव मलाई भनि बुझाउ यदि होई नहामी लेता
 भनिले व्याकी मात्र हो भई भन्या श्रुति प्रमाण सुन ॥ १८ ॥ प
 तो वाई मानि भुजानि जाये के भन्या श्रुति को प्रमाण सुन मानि
 मई देत गुडी कीन हुँछौ पानीमा को भी जाउँ नुरची सो हुँछौ
 की होई न भन्या प्रमाया भनुर जिव शिव बोली भेद मात्र हो
 भी न देखेन ॥ १९ ॥ वृक्षैव सर्व भूतानी जायेते परमात्मगा ॥ त
 स्मादेतानी प्रभव भवति त्ववधारयेत् ॥ १९ ॥ येस्को अर्थ सुनो
 यो चरान्न रस पूरुग भूत प्राणिमा परमात्मा स्वरूप ते गरी उने
 येके परमेश्वर वृक्ष मात्र रक्षा काहु न दोषो छुँदै छैन तस्मात्
 जान्या हुँछे वृक्षमाया भन्या देत विद्या होई संपूर्ण वृक्षमा
 त्र छर भन्या धारणा गर्नु वृक्षमाया हुँछे होई न येस्मा फेरी श्रु
 ति प्रमाण सुन ॥ २० ॥ यदा ह्येव धतस्मिन् दूर भरण कम्
 ने अव्यतस्मा भय भव ॥ २० ॥ श्रुति अर्थ ॥ छोरो बुद्धि भयाका
 मनुष्य मात्र येके अंदैत वृक्षमा जीवात्मा परमात्मा अंतर गरी
 मध्यान गन्या हुँछे ध्यान गर्ने पदार्थ ता अके छन भनी उपास्य
 र उपास्य कर क रूप भेद ले भयाका मृध मनुष्य कन मात्र नाना
 भयको भाषी हुँछे येके छर भन्या लाई भय क्या माँछ दूँदै छे
 न ॥ २० ॥ फेरी भाषा ले सुन उने वृक्ष देखी तीन तत्व व्याकी
 त दुपद १ त्वपद १ अमि पद १ तत दुपद भन्या की माया हो १

त्वपदभयाको जीव हो १ असिपदभयाको ब्रह्म हो १ जीवको
 असिपद हो १ तत्त्वको अंश चेतन्य हो १ चेतन्यको अंश धैर्य
 हो १ मायाको असिपद हो १ तत्त्वको असिपद हो १ स्थितको
 असिपद हो १ जलजीवको असिपद गुणवीर्य हो १ तमगुण
 अग्नि हो १ रजको गुण रक्त हो १ फेरी जीवको नाम पावक
 जीव १ जाति १ सुत्रात्मा १ अजरात्मा १ ब्रह्म १ जहादेवी उ
 त्पन्नभयाको हो ताही तयेई छन ब्रह्म कहताई छन १ आ
 त्मालिनभयोभया जिवत मुक्त कहताई छन अनीमत
 त्वमानित्वबुद्धि जो हो सोही जीव हो अर्कोही छन न जन्मे
 यके बुद्धिमा मन बुद्धिचित्त अहंकार भे रखाई फेरी सुन
 अतहर १ जहद १ जहर १ अजहर १ भन्येको ब्रह्म हो १ जहद
 भन्येको माया हो १ जहद भन्येको जान हो ये स्माईती न ब्रह्म
 माया जान पत्रिये के हो दोशो होई न भन्या श्रुतिप्रमाण छ
 ॥ २२ ॥ सुचतात् सुत्राभिन्ना कुं सुत्रनामनरपद ॥ तत्सुत्रं विदी
 ते नमविप्रो वेदपादग ॥ २३ ॥ तेन सर्वमिदं प्रोक्तं सुत्रमात्रेण
 ईव तत्तत्शुभ्रधाद्योगी योगविज्ञानं दर्शयति ॥ २४ ॥ ब्रह्म
 च ते जे विद्वान् योगमुत्तममस्थितं ॥ ब्रह्मभावमयसुबंधारं
 प्रसोचते तदा ॥ २५ ॥ भन्या फेरी श्रुतिको अर्थ सुन उने यके केव
 ल अंतर्गामी ब्रह्मदेवी उत्पन्नभयाको ब्रह्म सुत्रकनधार

नागर्था मनुष्यमात्रजोहनु सो वेदवेदान्तमा पारगत गयाका
 विप्रकहलाईहनु जसो येके सुत्रमा मनिहहु गुथीयाकोईहनु
 तसो उने आत्मारुपी अंतर्ध्यामिबुंलसुत्रमा संपूर्णचराचर
 उने रक्षाकाहनु भनी जानि सोही बुंल सुत्रकन धारनागर्था
 योगेश्वरमात्रयोगमा पारगत भयाका तत्वदर्शिईहनु तव
 उने मात्रगुरुईहनु अर्को गुरुहोईन यस्मा उत्तमवृत्तशुत्रमा
 स्थित भेरहया योगेश्वरले वोही रक्षागाका शुत्रकन त्यागी
 केवल उने चेतस्यबुंलसुत्रकन मात्रधारणागनु भनी बुंला
 ले बुंलोपमिषद्भन्या वेदान्तमा कछाकाहनु तस अर्थवै
 ल्यमाया यकेहनु दोओहैन ॥२५॥ हृदयहीन मोकारघ
 टा नादविशितवत् ॥ प्राणानोदिर्घतनाद अर्थ पुनसंवे
 शयत्स्वर्य ॥२६॥ भन्या भगवत्वाक्यको अर्थ सुन हुंका
 रभनेको जोहसो बुंलेहनु तस्मात्तुही हुंकारकन पप्रा
 सनवाधी घरागका नादकारकाहेईन हुताई प्राणया
 मरुपी नादलेनिने हुंकारकन कमलका नातका तंतुहे
 दशमस्थान पर्यंत माहादीर्घसोरले गरी उथाईले जा
 बुंफेरी तेस्मात्तले हीन होईयाका पंधे विंडुकन मुला
 धारदेवी आरभगरी मुठतिलक कमलका कमलमा
 शुद्धमंततुहे गरी उठाईले गै मन्मापुका शगरी फेरी घंटा

कानादकारन्कारद्याकोके उदात्तनादनेगरीफेरिस्वहिस्थ
 त्मातीर्ककारस्थिरगर्नुदिनप्रतिनिर्कालयस्नाप्रकारे
 ५॥१॥१॥२०॥२५॥गरीवंधाउंदावंधाउंदेवहनरिर्ककारपुष्पा
 पानकसैअजानिकोपनिशक्तिकुराडलिनिजाग्रेत्योक
 राडतीनीजाप्पेपहिवेनुआदिदशविंधकानादलैक्षेनैसुनै
 उत्पन्नईछरू॥२६॥त्योदशवींहुकोनादतक्षणासुनपथ
 मचिर्गितिचीचिनिगात्रं१दीतीयेचिनिनिनितेगा
 चभजनम्२त्रितियेघरणकारस्वेदनंपति३चतुर्थसं
 यनादकंपतपशिर४पंचमेतंचिनादश्रवमेतानु५ष
 ष्ठमेस्नातनादस्मृतनिषेवन६सप्तमेवेतुनादोःपुरुषि
 ज्ञान७अष्टमेमृदंगनादोपरावाचस्तथा८नवमेभिरि
 नादोदेहदिव्यचक्षुस्तथा९दशमेमेघनादोपरिर्वृक्षभवे
 कृष्णात्मासंनिधौ१०यस्नाप्रकारकानाददशविंडसुनेपाहि
 आफ्रास्वरूपपाईनिश्चयभेस्थिरहोईजान्हयोर्ककाररू
 पिकर्मयोगाभ्यासजर्दामानुनआयाअनुताईछ१मुदो
 आयादेहफुर्दछ१आडआयाधातुगिर्दछ१हरियायायव
 हताईछ१हरियोमध्येपटोलकोभाजिमात्रयानु१तेतया
 याआड्डुछ१मुखमाफोकीउथूछ१महिषायाकफू
 छदहिआयावाठईछ१काचोआयापित्तईछ१पिरोआया

धातुफात् १ अतिगमिष्याया चन्दुकताकोशक्तिहत् १ व
 लघत् १ चिसोषाया अग्निमर्द्धवायुवर्द्ध १ आगाकान
 जिकमा नाद प्रागायामगया व्याकुलचित्तभेरीरफुटि
 मरणाताई आश्चर्यकोहि रहन १ तस अर्थ नाद प्रागायाम
 मगदीमा आगातके १ वतिको ज्योतिपनिनहेनु अथवा
 ताहागमिको परिश्रमपयो भन्या गरम्पानिमर्दगर्नु भे
 सिकादुदताई गर्माई फेरि ठडागरिखानु ताहाते जनजर
 घुमतापो भन्या फेरि भेसिकाडुद डुदुदा डुदुदैको फिर
 स्मृत्यानु फेरि सदी भयो भन्या गाईकाडुदमा सुथोजुवा
 नुजाइफल गरम्गरीखानु वायुवर्द्धो भन्या मुगिको धि
 वरि वियानु सुथोजाई फल मिताई आफ्ना देहजतिको
 गरम्गरिखानु मंडाग्नि भयो भन्या ठडिभासा घूमा गर्मा
 ई आफ्ना देहजति गरम्गरिखानु प्यामताग्या तातो पानि
 खानु विसेम्भ्रातथादा प्रथम सातिचावलको भात पुराना
 गरुकोरोती दास्मा मुगिमोदर रहर चिह्रोमा छु पिरा
 मामरिच सुथो नुमा सिद्धो साम्भ्रा खानु मिथामा मिश्री
 खाकु साधनमा कले साधनगर्ना हवस्तापनि विघ्नहवेन
 अर्थात् कसो भन्या खानामा यो शरिर विचार गरिया केहे
 विघ्नहवेन विना विचारने खाया तसर्थ यो शरिर कच्चा छ

मुलवर्धनगर्नु मुलवर्धनभयाकोआसनकोउनेहोभनोला
 तपप्रासनवाधीपक्काडितीरहातडुवेतगीजुनपदीकोपाई
 उसैतिरकाहातगरीडुवेपाईकोबुद्धिओठापकीजतिजतिस
 कोउति२अभ्यासगर्नुचिमुकलाईवत्थास्थलमामितार्इना
 शाग्रमादृष्टिदिरहनुरगुरुलेवतायाकोध्यानगरीरहनुरजो
 हसोहिमुलवर्धनभँछरुफेरिचन्दसूर्यकामार्गलाईदिन
 चन्दुगात्मासूर्यवरोवरगराडनुसकोभन्यापनिउत्तममूल
 वर्धहोभनेकोहयोशारिरकच्चाकृतालेतानारोगुत्पन्नईछ
 रुतसअर्थमुलवर्धनगर्नुपर्दछयो कहिआयाकोक्रियायो
 मपनिजाहासमगुरुकीपानभेआत्मानुसंध्यानईदेनता
 हासमयोक्रयायोगनगरिइदेनतकथीगुरुपारशास्त्रोक्त
 आफुआनुअनुभवेउतिकोप्रदीपादमायुकेअदेनआत्मा
 नैडाकारभयोभन्यातोभयआयाकासम्पूर्णकर्मछोडीदी
 नुरययुर्वेदकावाक्यकेअरवईअहर्वँछोस्मिहुँखँवँछ
 भनेकावाक्यकेकोअर्थकोअनुसंधानगरिउत्ताआकाश
 हेसम्पूर्णमावाचकभयाकाआफुआचार्यगुरुलेकहिग
 याकोउनेहुँखँवँछतमहिरसाहुभन्याआपराडवँछकोधा
 रनागरितीसंपूर्णकहिआयाकाकर्मकनछोडीदीतुर॥
 २॥ पातृधिव्यातिष्ठन्पृथिव्यामनरोयपिथिनवेदपस्य

पृथि सरि ये पृथि मानरि समय ॥ २८ ॥ भन्याश्रुतिको
 अर्थ सुनय तोयो पृथी आदि चराचर वनायेर उमें माफे
 रि उने अन्तराज्यामि रूपले परमेश्वर रक्षा का हनु भनित
 इ पृथी पनि जानेन इ पृथिमा अन्तराज्यामि रूपले परमा
 त्मा वंश रक्षा को जी ह भन्या यहि आत्मा कृपा संपूर्ण जी
 त्या भया का पुरुष मात्र यो पृथि आदि संपूर्ण चराचर
 मा उने परमेश्वर अन्तराज्यामी रूपले रक्षा का हनु भनि जी
 न्द हनु अर्को जानेन ॥ २९ ॥ सर्व रत मिद वंश आत्मे
 भ्म दशर्व ॥ अन्न देवता दिति तादर्थ अविदिता दंभी ॥
 ३० ॥ भन्याश्रुतिका अर्थ सुन योजो जति चराचर हनु स
 पूर्ण निश्चय उने यके वंश मात्र हुन माया वंश भन्या विस्मय
 दो थो हनेन वंशता आत्मा सद्धले मात्र कहि ह अर्को सद्धले
 कहि देन तसर्थ जाहा संमतिने अद्वैत वंशमा प्रतीत हुनेन
 ताहा संमत्यो जानि हु भन्या अर्धे रहि ह जवत श्री गुरुका वा
 क्यले र वधिया वेदान्त सास्त्रले अद्वैत आकाश जस्ता व्याप
 क आत्मा वंशत महिर रक्षा हु भन्या प्रतीत पारि जव आफे
 मा वंशको स्वरूप अनुभव हुन्छ तबतस्को भोनी हुन्छ अर्
 त देन ॥ ३० ॥ यस्मापंत तस्यापंत यस्यान वेद स ॥ तं ह स्या वं

तिको
माफे
भनित
परमा
गीजी
राचर
भनिजी
न्यामे
धी॥
हृत-ध
वसमय
सवदेन
हुदेन
कावा
मायाप
याफे
अह
स्याव

हृणो रूपा मिति तत्त्व विज्ञान ॥ ३१ ॥ भन्या अर्थ सुत मत्ता प्रमा
गाते बुद्धि ज्ञाना प्राणि तप मत ताई मात्र सा चो मा दृष्ट दैत वा
डी मूर्ख हत यो मत कन अयत्त हारु डर यसे कार न जा
नि हक का भुभि पाये मत को ही पाई देन न तस अर्थ जानि
हक का मन यो संपूर्ण वृद्ध हो भनी मा नु जो ह सो ही ई का
सि दान ह यत्ता तत्त्व जान्या विच देन ह हते त यो देवी या
का मुनिया का जानिया को जो जति हो सो संपूर्ण देह भि
मानि जिव मात्र हो भनि यो के न के नामा श्रुति ले क ह्या को
हो तस अर्थ वृद्ध मा या य के हो डुई होई न ॥ ३१ ॥ यसे प्रमा
गो मा य के बुद्धि देखि अचरि १ भुचरि १ वाचरि १ सुगो
चरि १ उन्मनि १ इ पाच मुदा हर वत मान भै र ह्या को ह मु
ख मा वे चरि हृद नाक मा भुचरि हृद १ नेत्र मा वाचरी हृद १
कात मा सुगोचरी हृद १ मन मा उन्मनि हृद १ इ पाच मुदा
य के बुद्धि देखी हुना ते पति जिव बुद्धि य के हो डुई होई न ॥ ३२ ॥
स हो वात त दैत दक्षर बुद्धि विड अवि वदीय स्थुत असुक्ष्म
मेव महत्त्व महत्त्व मतो हीत मरति ॥ इक्षामय मन मये ते
जस्के आपन मय अम मेष मपानि पाद मनंतर न वृद्ध
न इक्षति न किंचन दृष्टाति ये क धेन मनु हृद य यत इ प

मे प्रधधनिरज पर आकाश द आत्मा महावधु मनु सेवा मुहु
 रु वाम ॥ ३३ ॥ फेरि श्रुति अर्थ मुन यत्ना दैत वंश कन जा न्या
 जो छ सोहि वंश हो वंश को रूप अर्को दैन ति वंश जा न्या हरुत
 सोहि वंश कन मान अ धि वंश न गर्द छत्र अर्को लाइत जानि
 दे छे पनि दे छे न भनि गर्गो चार्य कृषि जो छत्र सो यज्ञ व
 ल्के रागमा अमिकन कह छत्र ति वंश कस्ता छत्र भनि सो
 धडा मा गर्गो चार्य आज्ञा गर्द छत्र ति वंश अति न धुलो न मानु
 न छो तो नला मु न रातो न का लो ये स्ता संपूर्ण वेव हारा दिते
 यत्ना छ भंनु न कुना ले मनो मय ईच्छा मय तेज मय प्राणा
 मय कि ना डि पनि न भया को सुत्प भित्र वा हर भंन्या वेव हा
 रुप नि न भया का संपूर्ण वस्तु मारहि ताहि हि पनि न रक्षा का
 भित्र भया का वेव हार पनि न भया का कुना ले अति चंचल आ
 न धारणा गर्नु न कुन्या भया का यत्ना विना रूप का रूप भया
 का वंश कन श्री गुरु का कृपा ले गरि ये क वेर मात्र दे सुपा
 यो ज भया वडा आज्ञा नित्यो अज्ञान मन ले धोइ ना ले गरि
 उस्ता आकाश जस्ता पर वंश आत्मा अपि कुवलाई पनि यो
 मने रुपि आकाश मा मने ले हे दी मा मने ले दे छ भनि वृ
 द्ध दा रु गपना भ वेद सा आ मा क ह्या को छ त मर्थ वंश मा या
 य के हो दो श्रो छे न ॥ ३३ ॥ नेहाना ना सि किंचन अ विज्ञा न

विद्या तता करोति ॥ यथादेशो नीतिनेते स भूतमाप्नोति य ईहना
 नेव पश्यति ॥ ३४ ॥ भन्या फेरी भुती को अर्थ सुन यो संसार मा सी
 सार जो को ही देवी ह सुख को ह सुख तो सी पूर्ण हो ई न हो
 ई न भंडा भंडा को सेष जो र ह ह तो ही वृद्ध हो भन्या बोध
 भये पछी जानि जो ह सो मुखि ज सो हो ई जो ह न मुखि जो
 व डो जानि जानि ज सो हो ई जो ह य से निमि न जी न्या जो ह न
 सो ने ति ने ति वा क्य ले तो हो ई न भन्या उ पदेश ग ह जो यो
 ल सा र ला ई सत्य नाना ला ई मी न ह न सो त य म रा ज दे वि म
 र न पा उ ह न न स र्थ मा या वृं ह य के ह न दो थो ह न ॥ ३४ ॥
 त प्र था म हा त्म त्प उ भे कु ने श्च नु संचरति ॥ पु र्वा ष रं चे
 व मै व य पु रू ष य ता नु संचरति स्व प्रा न्त वरा न् ॥ ३५ ॥ य व
 वि ज्ञा न न भ स्म र ति रा त्म कृ दा त्म सि भु त मा त्मा नंद स्व रा त
 भ व ति त स्य स र्वे षु का म पा रो भ व ति अ हं व स्मे य विं दु स्व फ
 ल स्य वि भू ति नो वृ द्धि ति ॥ ३६ ॥ भन्या भुती अर्थ फेरी सुन ज
 लो महान दि को व डो मा ह्यो जो ह सो तो न डी का दु वें त र मा आ
 उ दा जो दा से त्दा ह डो प नि पार जा दा मा ये क वार आ उ दा ये
 क ह ह को ह दे न त स्ते वृं ह मा या भ नु प नि ना म स ज्ञा मा न ह
 भि न ह न य स्ता प्र मा रा गरि वृं ह जानि ह ह जो ह सो वृं ह मा
 र ति र ह ह नु आ फा आ त्मा वृं ह मा कि दा ग द ह नु आ त्मे

मा मिथुन भाव राखने जो छनो उने लाई स्वरात कहलाउछ
 न तसर्थ उने जो छनो मता बुझ राख्छ भन्यानि श्रवण आ
 फा स्वरूप हुनाले यो संपूर्ण लोक आफै ईच्छा ले गरी पुग्छ
 छन उने लाई माया बुझ भन्या भुमरु हरेन यसैले येक देव
 नाते अश्वत्थ पति ईच्छा राख्छ देन न भनाले बुझ माया
 यके छन दोश्रो छेन ॥ ३६ ॥ तंदिदे एवं माया वेद बुझा
 हमस्मी ॥ स इतिथि सव स्या तस्य न देवा न स्वने ज्ञात
 भुत्वे ॥ ३७ ॥ स्या सर्व आत्मा यो यामर्थ देवतां मुपास्ते
 स अहं मन्यो भूति हुनाले मनुष्यको दोष हाको पशु
 कहलाउछ मनुष्य होई न भनाले पनि बुझ माया यके छ
 दोश्रो छेन ॥ ३७ ॥ गुड खंड सका ध्या भिना सु विक्रीत
 यो येथे वे क्षोक पुरक कनाथा यथेव हो मो विधा सोष्ट
 थक पृथक यत्त शो पदुपादानं मेक सुख अड व्ययम्
 ॥ यैव मृग गीता विना ~~सुख~~ र शो पसुद स ॥ ३८ ॥ भ
 न्या श्रुतिको अर्थ मुन जसै यक उषु देखी सुडो गुड धा
 ड चिनि बोला मिश्री का लफी नाउ भया है येक आत्मा अं
 तर्पामि देखी यो नाना विश्व संसार व निरह्माको छ उले
 यके उषु ~~का~~ नाना र सव न्या है एके सुवरी देखी पनि
 वा जुवाला करण्ड तरु न नथ ईत्यादि नाना अनेक भेष

भयांके यके सुख सत अवित देधीपनि जसे माताका छडा
 दिविसे आसमार ह्या मा श्री सूर्यको प्रतिवीं व घगडाडीभी
 नपनाते अनेक भाडा बडा है तसे उने अंतर्गामी परमात्मा
 देधीपनि मो पूर्ण चराचर उदय होई र ह्या जाके स्वैथ तेति
 वे धुवत्स ॥३८॥ फेरी श्रुतिको सुख सुन अहो आसर्ग्यो
 जगत सो छ सो प्रमाण लेवी चार्ग दात माया स्वरूप मात्र भे
 र ह्या को रहै छ भई न जा सा मुनि हर जो छ सो तपस्कात मा
 जो जिव जो छ सो माया वनि भुती र ह्या को पनि श्री गुरु का ह
 पाते सकल व्यापक वंश स्वरूप होई जा छ तसर्थ तो वीअय
 हे र मा नि पु ल व ला ई ई न्दा दि देवता पनि अनि मादि गरि
 या का अष्ट सिद्धि लिया दिदा रु भ न्या अभिप्राप गर्छ नूनि
 मुनिका भये ले उ भने का हो समर्थता हुने न ये स्ता वंश भा
 व रु न्या मनुष्य जो छ सो संपूर्ण देवता हर का पनि आत्मा छ न
 स्वरूप होई जा छ न अरु सुख प्राणिका के गर्नु प ~~छ~~ न सर्थ
 जीव वंश यके हो भनि वंश भज र गने ले फेरि वंश भज न छो
 डी ई न्दा दि देवता को भज न गर्नु ला ग्या भन्या त्या मनुष्य फेरि
 यो म त्या अर्को भन्या वृद्धि को छ तसर्थ देन विचार छोडी छोडी
 माया वंश यके हो भन्या विचार सिद्धी न अर्को सिद्धी न देन मा
 या वंश यके हो दो श्रो देन ॥३९॥ अहो मेको सुख स्वजाता

साक्षि सदा व्ययत इह न गुप्त इहो विचारस्य यमिदम ॥ वृत्ते
 वाहं स मसीतं सचिदानन्द तक्षणा नहं देह स्वमदु मोक्षा
 नमित्युयते बुधे ॥ ४० ॥ भव्यां फेरी शुतिका अर्थ मुन नाना
 अर्को विचार छोडी अहं मय के जो रक्षा दु सो निश्चय सुख
 अहं का गडि हह कन पनि प्रकाश गने भै रक्षा को रक्षा दु फे
 रिम जो दु सो अव्य अविनासि सत भने को पनि मे रक्षा दु ति
 देह निश्चये पनि महिरक्षा दु भनि विचार को विवेक विचा
 र अहं म जो दु सो समा सांन पूर्ण वृत्ते इ तस्ते म पूर्ण उ
 पाधी वी रही त भये को पनि चिदानं र प नि मे इ अहं व
 द्या स्त्री भव्या महा वाक्य निश्चय ने पनि म जो दु वृत्त इ न
 सुम त्ये देह प मह ई न भनि निश्चये गर्नु जो दु सो हिजा
 नि हो देह त भान हो ई न भनि अखंड बुद्धि भये को आत्मा त
 त्व जीव्या ज्ञानि ते के हे का दु दा पनि वृत्त माया बो लि मान क
 दु ई हे न ॥ ४१ ॥ स्वात्मा श्रु गड मुख र्व त्व मुक्ता पुत्र पाव च पु
 रुषा ॥ देहाति त सदा कार सु इ मरी भया ह सो ॥ ४२ ॥ व
 त्वे वस्तीति सद्रूप निगर्त न्वत या स्थिति ॥ ध्यान म व्ये न
 विष्वा ता परम नन्द यीनि ॥ ४३ ॥ भव्या शुति अर्थ मुन हे
 मुख देहात्मा वा दि हो आका आत्मा स्वरूप कन त प स्या
 दर्त न र समायेता अन्वो रात्मा त्म शुतिको युक्ते ने गरियो

देहमादेहांतितभे देहेमारह्याका अंतरज्यामिआ
 त्मा लाई सदा सर्वदा वेवहारकारन संपूर्णमाधका
 शभे फेरि आपेमा साहि स्वहृपले रह्याका कन जोनु
 त श्रुतिका युक्तिले विना यो ससारि नेत्रले देखना
 लाई अजो गेछ यो गपेछ न त सर्थ मत वुझे रह्याछु
 भन्या सछतिले गरी सदा सर्वदा जस्को चित्त भिराई न्व
 भे रहिछु तसे कन विद्यात ध्यान सव्यले हो भनिया
 कोछ तसे ध्यान सव्यले गरि अर्द्धे त परमानंद दि
 न्या होई जीछ त सअर्थ वंछा जिव डई होई नयके हो ॥
 ४३॥ अथर्व वेदाहं ब्रह्मास्मि स ईव २० सर्ववध्याते तप
 स्प हि देवा अनाभुं या ई सत आत्मा स्वगी २० सभाव अत
 पवन स्यास्ति पुं य पाप ज सत पा ॥ ४४॥ भन्या श्रुतिको
 अर्थ सुन जो न पुरुष मता निश्चय अर्द्धे त केवल वंछे छु
 भनी आप्का स्वरूप जान्द छु न उने कन मात्र यो कहिया
 को संपूर्ण फल आदिये कहुना ले गरी अधि गरी आया
 को कहुना ले आज फेरि पाउछु न अधि गरी आई आज फे
 रि पाया को कोटि उपाये जो जति छु सो संपूर्ण ले पहुनु
 न सकना ले तिन दुख दिन सकतैन आप्का सो आत्मा लाई
 निश्चये जाने कोछ भन्या उन्को महीमा त ईहे तवा डीह

हरुत क्या देवता हरु पनि येला कुन् भन सकतेन तस
 अर्थ तिनलाई संपुर्ण कहि आयाका पाप पुण्यको दुख दि
 न पनि सकतेन तव बुझ मायायके हो भन्या भुति प्रमान
 सो छ दुहो देन ॥४४॥ उहे वेष यते ततरति तेन कृत कृत
 ते तपात्त अवं स्ने तेन भवार्त् ॥ तत्त्व मस्या दिवा कथा स्या ज्ञा
 तो जगतो भवाङ्ग भुत्पुक्त बह पस्प ॥४५॥ भन्या के गी श्रुती को
 अर्थ सुन प्रथम मुख द्वे तवा डी हरु लेत सास्त्र मा ही कथा
 को पाप पुण्य दुई विचार गता निमित्त वडा आत्मा जो न्या
 गुरु का सरन मा जाई दुइ काम गर्नु कोन काम दी भनोता
 त अधि वेदांते पहुनु र अज्ञान देखित रिंद तव अधिग
 रि आयाको कर्म फेरि गर्ने कर्म ति दुवै कर्म को नाश
 भयापछि अहो मता वलै र ह्याछु मतार हिन छु भन्या
 आफ्नो स्वरूप आफ्नै जान्द छु तो जाने पछि ती सास्त्र
 ले कहि आयाका पाप पुण्य को तापर हं देन भनियो व
 ह दाह न्ये श्रुति प्रमाण छ ये सो वेदान्त तत्व मयि भन्या
 अर्थ न जो न्या भयाको हे मुक्त अज्ञानि द्वे तवा डी हो तिमि
 हरु जो छौ यो जगमा मुक्त भय का वेद ते पाप्मा श्वर्ग
 भवति भनिकहे का वाक्य मा सत्य बुद्धि गरि केन मान्द
 छौ मान्नु पर्देन स्वर्ग मा जाई अपसरा हरु सँग को वे

वक्ष्ये गच्छेत्ता यज्जगति भिक्षु भनि भन्या भयेका मुख
 का सुक का वातमा केन भुल्लक्षो न भुल भन्या वाक्य
 लेपनि माया रवेण भनु इहो ईह नय के हो ॥४५॥
 तत्रे नत्पुरुषस्वप्नस्वप्न किंच पश्यति अस्मिन् प्राणा येव धा
 वति तदेव वा अस्य सर्वे नाम सिस सहावोति रूपं सहाव्येति
 श्रोत्रं सर्वं सहापति त सर्वे ध्याने सहाव्यति कालेन सप्रदा प्रति
 बुध्य यथा गज ज्वलनादि स्फुरति गावि प्रति सो रत्य वये मेवे तस्मा
 ते तम न प्राणा पथ ध्वं विप्र प्रति वृष्टा रो भ्या दे पा दे वे भ्या लोका
 ॥४६॥ भन्या भुतिको अर्थ सुन जो न समये मात्पो अद्वैत पुरु
 ष सुत ह तव पो पुरुष स्वप्नादि पनि दे वदेत तस्कात्मा प्रा
 णादि ह रूपानि ताहि २ आका २ नामा २ ते गरिता ही २ तयेति
 नई ह न नेत्र पनि रूपने संग भया का छडा ता ही लयति नई
 ह कान पनि संप्रगा सव्दने संग भया को छडा ता ही लयति
 नई ह मन पनि संप्रगा ध्यानादिने संग भया को छडा न मे
 मा तयेति नई ह न जव पो पुरुष का रणा समेने गरि विड
 ई ह न तव पो जलो वल्दा अग्नि दे वि क्रि ल्का इधु द ह न
 लो पो आत्मा स्वरूप देयी मन को उत्पन्न ई ह सो मन को स
 ग भे प्राणा ह रूप उत्पन्न ई ह प्राणा दे वि देवता देत्य मुनि मनु
 ष्य जिवा यो नि स्वर्गादि श्रुति स्थिति सहा र संपूर्ण ई ने

अद्वैत आत्मा प्रभूदेवि न रचि हू होई रह्य को हू भनि भैना
 लेपनि येहि को पितना मा शुति प्रमाण लेपनि जिव रशि
 व वृक्ष र माया भनु जो छ सो माया हो वृक्ष माया डूई होई न
 ॥४६॥ अद्वैत न पश्यति न तु तदिति सा सिमि अनो वि भक्त पे
 न्ये स्पति साध्यति ॥ तद्वथे हं कर्म चितो लोको क्षियते
 यवमेवात्र पुंरप चितो लोक क्षियते ॥४७॥ भन्या शुतिको
 अर्थ सुन यत्ना अद्वैत आत्मा लाई दैत देवने मुठ अ
 धाकन वार वार यो भव वाट विसंसार के हू विश्राम न पा
 ई फिरे रहनु पद छ मुक्त हुना को अपगा संके हू पाई दै
 न न जल्ले महा मुठ अज्ञानि पनि जानि जल्लो यो संसार मा
 आ फुले संचय गरि याका कर्म जो जति छ न संपूर्ण दे
 द्या देष्टे यसै लोक माना शई छ न तस अर्थ आत्मा भु
 संचये गरियाका सत्य गुणादि कर्म ले जो न्य पुण्य लोक
 जो जति छ न सो संपूर्ण उपनियले प्रकारे ना शई छ न र
 ह दैत न भन्या पनि वृक्ष माया यके हो डूई होई न ॥४७॥ प
 न्न नान्य तत्त्व पति जाने छ नेति नाया द्वि जा न्ना ति न दत्व यो
 ये दौत सांतय छय दलेते म न्य यवा आत्मा पहत वा पा वि
 तरो मृत्यु ॥ भन्या शुतिको अर्थ सुन जुन पुहु वले आत्मा
 वरिक्त अर्का दे द्या पनि देष्टे न सुगता पनि सुन्दै न जा

दापनिजोदेन अर्कोपोपुरुष विवेकि कोपनि अतिवि
 वेकि अहाई कहैरि अर्कोदेवद्वैत अर्कोसुन्दर भन्या तो
 अज्ञानि जो छ सो तेहि सराग धर्म भयको अज्ञान रूपि
 आत्मा ले भारि येको छ तो पापिको वारंवार जन्म मृत्यु
 छुटै न भनि येहि द्वैत नामा श्रुतिले कहनाले पनि बुझमा
 याय के हो दुई होई न ॥४८॥ बुझै सर्व भुनि जाये ते परमा
 त्मन ॥ तस्मादेतानि बुझैव भवति त्ववधारयेत् ॥४९॥ भन्या
 अर्थ भुनयो सम्पूर्ण भुत प्राणि चराचर माके वन परमात्मा स्व
 रूप ले गरी उनै परब्रह्म रक्षा को छ दोशो छैन तसर्थ जो न्याज
 न ले यो चराचर भुत प्राणि जो जति छ सो संपूर्ण उनै परब्रह्म
 मात्र छन अर्को होई न भन्या श्रुतिले भन्नाले पनि बुझ माया दु
 ई छैन यके छ ॥४९॥ स्वल्पमप्यतर्क्यत्वा जिवात्मा परमा
 त्ममति ॥ एतेति स्मृतिमुक्तात्मा भयतस्याभीनाधित ॥५०॥
 ॥ भन्या फेरि श्रुतिको अर्थ भुन अति मानुछो तो बुद्धि भ
 याका मूलात्मा मनुष्ये ते मात्र ये सा अद्वैत ब्रह्म ताई जि
 वात्मा परमात्मा अन्या अंत भेद ध्यान गने हुन ध्यान गने
 पदार्थ वस्तु अर्को छ भनि उपास्य उपासक रूप भेद भये
 का देहात्मा ताई मात्र भयको भासित हुँछ भन्या अर्थ ले
 पनी बुझ माया भनु यके हो दुई होई न ॥५०॥ यथा ह्यवेष

येन तस्मिन्नुदरभरतर ॥ कहते अथ तस्य भयं भवति ॥ ५५ ॥
 भन्याभुति अर्थ सुन न ले वंश माया भन्या अविद्या ते गरि
 डई सरि रपनि श्रुति स्थिति संहार को यो भुवन भे ओफे
 भुति रहे को भुला डिया भुल्यो अके छेन कोई डई स
 रि र भनोला तय के हुतत्व को स्थुल सरि येक नवतत्व
 को सुक्ष्म सरि र डई डई सरि मापनि पंधुतत्व को सरि
 र लाई निषेद गरि नवतत्व का सुक्ष्म सरि र को पनि वासना
 जानिया ग डई तव ओफे निवान धाम मा प्राप् होई जाई
 भन्या ले पनि वंश माया यके छु दो ओ छेन ॥ ५६ ॥ येमे
 गरि य स्थुल शरिके सिता ह्म सुख इव मान पमान र
 सुक्ष्म सरिके वासना अंतर्गमा रहेन भन्या सोहि जि
 व मुक्त यत्कर्म कह डई अर्क लाई अतर्क कर्म कह डई
 न ॥ ५७ ॥ फेरि सुन उने वंश वाचा पनि चार छे न ह्म १ प
 त्रपति १ मध्य १ वेधरि १ श्रोता लाई ह्म कहि छे नेत्र कन
 पस्पति कहि छे १ स्वास कन मध्य मा कहि छे १ वाचा कन वे
 धरि कहि छे १ ई को पनि चार नाम गर्नु पई ॥ ५८ ॥ फेरि
 काम १ क्रोध १ लोभ १ मद १ माश्रय १ मोह १ येलाय
 त्म य्या विवेक मा मिथुन लाई काम कहि छे १ क्रोध लाई
 का ल कहि छे ममता कन लोभ कहि छे वीध न लाई मोह क

हैछ १ योवनृताई मडक हैछ १ अडभूतताई माधायक
 हैछ १ ॥ ५४ ॥ येसै प्रकाते उनेयके अन्तर्यामि ईश्वर दे
 वि सप्त परिवेष्टी रूप भेड जसो कृनाते जिव ईश्वर
 वंश माया भनयके हो दो ओ देखेन ॥ ५५ ॥ फेरि शुन आगा
 र पोल्या दुई नाउ भयता पनि दुई ने हो की येके हो उस्ते
 वंश माया भन्या पनि दुई होईन यके हो जसै मनुष्य को
 उरु धाथर मनुष्य दुई हो की होईन तसै जिव ईश्वर प
 नि यके हो दुई होईन १ जसै सूर्य को किरन सूर्य दुई
 हो तसै वंश माया यके हो दुई होईन १ फेरि शुन आ फेरि
 अंताई सिकां उदा मा दैत वादिको दैत वाद खंडन गर्दा
 मा १ यो माहावाक्य को प्रति उत्तर गर्दा मा १ वंश समाई पु
 ति उत्तर गया प्रते वा यता देन विच मा सिद्धि न छ ॥ ५६ ॥
 मन येव मनुष्याना कारण वंध मोक्ष स्पे ॥ वंधाया विषया म
 गो मुक्तो नि विषय मन ॥ ५७ ॥ येके छ भनी लो तात वंध
 र मोक्ष कारण मने छ तसर्थ मन जीन्या मात्र मनुष्य कहता
 उछ मनै मोक्ष मनै वंधन मनै देवा निरजत देवा ये कहि
 छ अर्को छेन को वंधन को मोक्ष तव के छ भनी ला गंगा
 घोर राया छ र हर घटि न्याये छ मृगत ह्माय की न भगा
 न्याये छ तो हाचा मुक् न्याये छ रज विज न्याये छ येसै

यो मुझ जीयो भन्या मात्र परमात्मा स्वरूप होई कन जि
 वन मुक्त कह्यो उद्धृत सर्थ बुझ माया ये के हो दो ओ छैन
 ॥५७॥ श्लोका भे म प्रवक्ष्यामि दुस्तर गीथ कोटिभिः ॥ वंश
 सत्य जगत् मिथ्या जिवो वंशैव केवतम् ॥५८॥ फेरियो
 भुतिको आधा श्लोक ले कोटि गीथ को मर्म कह कोटि सु
 न भंछु वंश भने को साचे छन वंश माया भिन्न हो भन्या
 द्वैत वादि जगत् मिथ्या केवत जिव वंश माया कोत
 येक हो दो ओ होई न मन माया दुनु ये के हो भने माया स
 माई तीन लोक संसय पडिया को कहु न लाई य सोयो
 संपूर्ण वेदान्त सास्त्र को मत निचारि जिव वंश ये के
 हो भन्या वेदान्त सास्त्र लाई जह जह क सेते होई न
 भनि निडाग्यो ई न वेदान्त हक पाप ले गारि अनेक
 योनि नरक वास फिरि रहनु पती भन्या प्रमारा छ अर्को
 छैन ॥५९॥ ~~गईती श्री यज्ञ स वेदान्त स्मृता अम्बर~~

गीता भाषातिव्य समार्प शुभला ॥ ॥ ॥

पी यादव पुस्तक दृष्टा तादृशं लिखीत मया यदि शुद्धो
 मशुद्धो वा मम दोष न विद्यते ॥ ॥ ईती संवत् १९७९
 साल आषाढ सुदी १५ रोज ३ मा गंगो शव हाडा कस्य
 पहीले भांडगाडि मातारे को हो क सेते तो भन गनु ॥

॥ वृंक्षनिरोपनस्तुति ॥

30

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ वृंक्षनिरोपनमाह ॥ स्थाननमः
गं नच नाद विंदु रूपं न रेखा न च धातु वर्णा ॥ न ईदृशिन ई
ष्टान श्रुति न थोता तस्मै नमो वृंक्षनिरोपनाय ॥ १ ॥ स्वेतं न
पित्तं न च रक्तं रक्तं हेमन्तं रूपं न च वर्णा च र्णम् ॥ चन्द्रार्कवह्नि
उदयो न अस्त तस्मै नमो वृंक्षनिरोपनाय ॥ २ ॥ अधो न ईदृ
शं न शिव न शक्ति नारि न प्रसो न च निर्दु मुर्ति ॥ बुध्ना न ईदो
न च वेद रुद्रो न तस्मै नमो वृंक्षनिरोपनाय ॥ ३ ॥ वृंक्षान र्वेडन
कातो न जिवो न गृह न सिध्य ॥ गृहं न तारा न च मेघमाता
तस्मै नमो वृंक्षनिरोपनाय ॥ ४ ॥ वेदो न शास्त्रं न च ध्यान सो
चं मंत्रं न जापो न च ध्यान दारी ॥ होमं न यज्ञं न च वेदं
जा तस्मै नमो वृंक्षनिरोपनाय ॥ ५ ॥ सक्षो न मूलं न च वि
ज फलं सायान पत्रं न च वेत पत्रं ॥ पुष्पं न गर्धन फलं न
छाया तस्मै नमो वृंक्षनिरोपनाय ॥ ६ ॥ गीभिर धीरं न
निर्वानं सुखं संसार सारं न च पाप पुण्यं ॥ वेदो न वेगो न
च मोदो भिन्नं तस्मै नमो वृंक्षनिरोपनाय ॥ ७ ॥ न सागरं
पद्मं न च पापं क्षत्रकुलं न जाति भव विज फलं ॥ पृथक्
पृथक् च पृथक् च मास्ति तस्मै नमो वृंक्षनिरोपनाय ॥ ८ ॥
ईति श्री सैकर चार्य विरचितं वृंक्षनिरोपनस्तुतिम् ॥

॥ अथ वेदेते ॥

३१

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ ते जो विन्दु परं ध्यानं विस्वातितं
हृदि स्थितम् ॥ आनन्दं सर्वसत्कं स्थितं सुखं परं वयेत् ॥
॥ १ ॥ दुःसाध्यं च दुःसाध्यं दुःसाध्यं च दुःसाध्यं ॥ दुःसाध्यं च दुःसाध्यं
॥ ध्यानं मनिना च मनिधिना ॥ २ ॥ जिता होरे जितकोधो
जितकोधो संगो जितेन्द्रिये ॥ निर्द्वन्द्वो निर्द्वन्द्वो निर्द्वन्द्वो
रपि गुरुः ॥ ३ ॥ आगम्या गम्य कर्ता च गुरुमानार्थमानतः ॥
सुखानि त्रिनिविंतीति त्रिविधा ह्यमुच्यते ॥ ४ ॥ परं गुरु
मिदं स्थानं मयि क्लृप्तं निराश्रयं ॥ यो मर्त्यकला सुखं
विष्णोस्तत्परमं पदं ॥ ५ ॥ अथ कं त्रिगुणा स्थानं त्रिधा
तु रूपवर्जितं ॥ निश्चलं निर्विकल्पं च निराधारं निराश्र
यं ॥ ६ ॥ उपाधिरहितं स्थानं वाङ्मनित गोचरं ॥ स्वभा
वभावसाक्षात् संधारैकपदे कितं ॥ ७ ॥ आनन्दनेना
तितं दुःखेष्टं मयि ध्रुवं ॥ चित्तवृत्तिविनिर्मुक्तं सा
खतं कुर्वमच्छतं ॥ ८ ॥ तद्विज्ञानं नन्दं ध्याता तं विज्ञातं
रायनं ॥ अचिंत्यं चिंत्यमात्मा गतं ह्योमपरमं स्थितं ॥ ९ ॥
असंख्यं संख्यभावं च सुखाति तं मया स्थितं ॥ न ध्यानं न च
वाध्याता न ध्येयो ध्येययेव च ॥ १० ॥ सर्वचेतपरमं भुक्तं
न परं परमापरं ॥ अचिंत्यं मयि बुद्धं च न च सत्यं न सर्वविदं

॥ ११ ॥

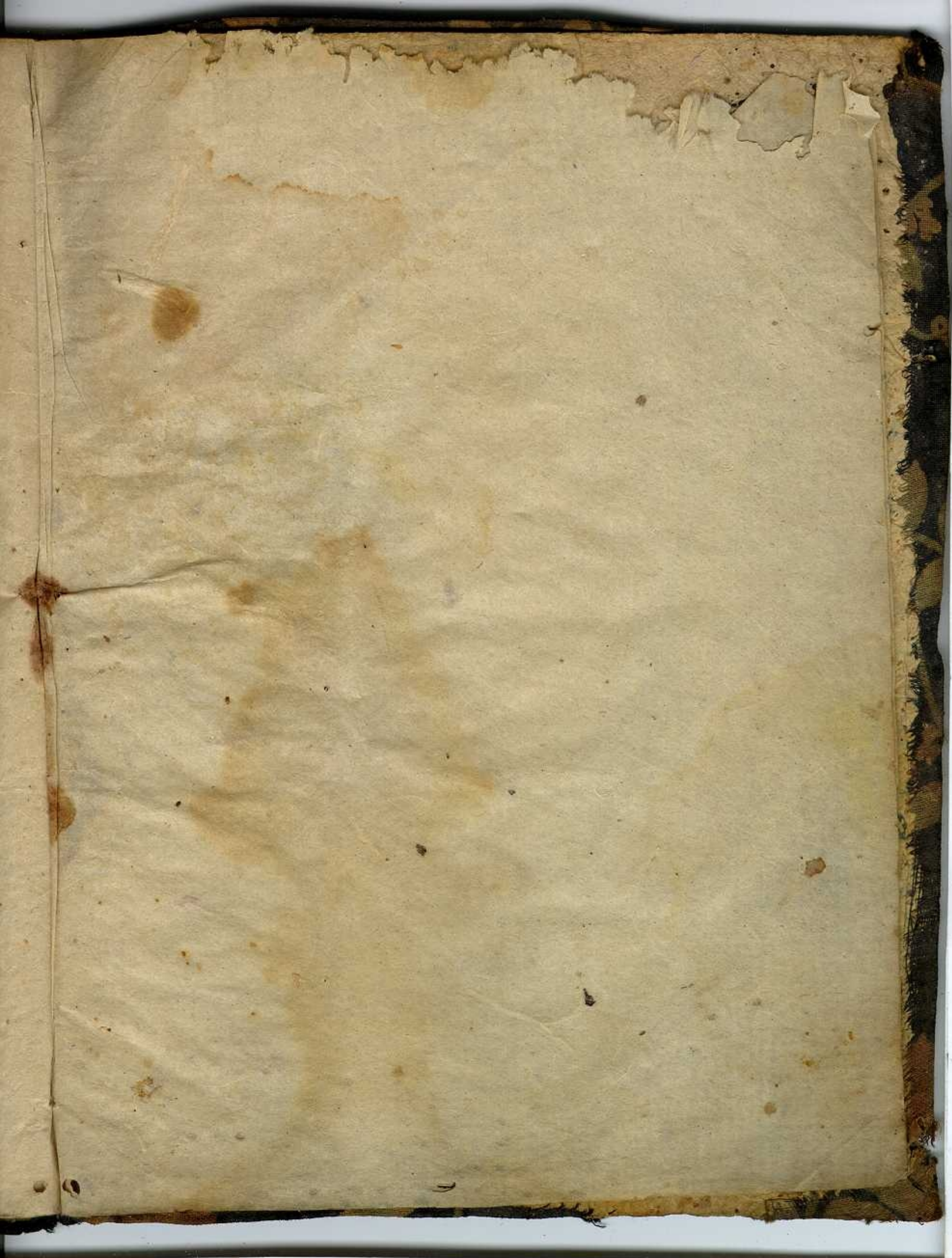
॥ अथ वेदेते ॥

॥५५॥ मुनिनां तत्त्वयुक्ततु वदेवानपरी विदुः ॥ लोभमोहभ
यंदर्यं कामक्रोधंच किल्बिषं ॥५२॥ शितोष्णक्षुत्पि
पासंच संकल्पंच विकल्पकं ॥ न ब्रह्म कुतपर्यंच न मुं
त्तैर्गंध संचय ॥५३॥ न भयं सुखदुःखंच तथा माना प
मानयो ॥ येतत् भाव विनिर्मुक्तं न ग्राह्यं ब्रह्मतत्परं ॥
५४॥ तद् ग्राह्यं ब्रह्मतत्परमिति ॥ ॥ इती अथ वेदेते
जो विंदु पनिषत् संपूर्णं शुभम् ॥ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ योगसिखाम्प्रवक्ष्यामि सर्वज्ञा
नेषु चोत्तमां ॥ यदा तु ध्यायते मंत्रं गात्रकपोभिजाय
ते ॥ आसनं पद्मकं वद्धा ये चान्ये दापि रोचते ॥ कुर्वा
न्नाशाग्रदृष्टिच हस्तोपादौ च संयुतौ ॥२॥ मनसर्व
त्रसंयम्य कुरु कारतत्र चिंतयेत् ॥ ध्यायेते सततं प्रा
जो हृत्कृत्वा परमस्थितं ॥३॥ ये कस्तुभोनवोदारे त्रि
स्थाने पंचदेवते ॥ इदमेतु सरिरेवातिमानुपतक्षये
त् ॥४॥ आदिमंडसदिव्यं रस्मिजातं समाकुलं ॥ तस्य
मध्ये तत्त्ववर्हि प्रज्वलेदिपये निवत् ॥५॥ दीपशाखायां
यामात्रा सामात्रा मरमे स्थिन ॥ भिन्दति योगिन सूर्य
योगाभ्यासेन वै पुनः ॥६॥ द्वितीयं मुख्यनाद्वारं परिसु
द्विषमर्थति ॥ कपालं संपुतं भित्वा ततपस्यति तत्परं
॥७॥ अथानाध्यापये जंतुं गतस्वाच प्रमादतः ॥ यदि

॥अथर्वेदेते ॥

त्रिकालवर्तेन सगच्छेत्परमं पदं ॥८॥ पुंस्त्वमेतत्समाप्ता
द्य संक्षयात् कथितं मया ॥ तत्त्वयोगेन बोधव्यं प्रश
न्नं परमेष्ठिनं ॥९॥ जन्मानां सहस्रं यदा न स्पृती कि
त्विद्यं ॥ तदा न स्पृतिर्योगेन संसारक्षेदनं परं ॥ संसा
रक्षेदनं परमिति ॥१०॥ इती अथर्वेदे योगसिधौपनि
षद्संपूर्णं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥





Handwritten text in Devanagari script, likely bleed-through from the reverse side of the page.



Main body of handwritten text in Devanagari script, arranged in several lines across the page. The text is mostly illegible due to fading and the large stain on the left.

2265

